भजन

तर्ज– दिल लूटने वाले

माशूक रहमान है रूहों के,मेहरों से निहारा करते हैं
लज्जत और लाड ही रूहों पे मस्ती से लुटाया करते हैं

1–बिन चाहे सुख जब देते हैं, मांगे क्यों कर पायेंगे
यह लाड है उनकी चाहत का,बड़े प्यार से इसे निभायेंगे
निजघर का सब सुख देकर के,महबूब लुभाया करते हैं

2–मदभरी नजर तिरछे नैना, होठों की नजाकत क्या कहिए
खिंच जाते है उनकी अदाओं से, फिर हाल बदलते क्या कहिए
क्या नूर है उनकी सूरत में,घायल को घायल करते हैं

3–ये शराब तहूरा बेहद का, और सरूर का कोई हिसाब नहीं
वह इश्क पिलायल साकी हैं,और पिलाने का भी कोई जवाब नहीं
पीने वाले भी कम तो नहीं,बेहिसाब पिया करते हैं

4–यह तो नूर जमाल की महफिल है,फिर होश में रहकर कैसे जीयें
पैदर पे उनकी नजरों से,भर भर के क्यों न हम पियें
यह तो मौज उनकी अपनी है,मौजों में गुजारा करते हैं